बाल-वसंत - 1

प्रथम भाषा हिंदी कक्षा छठवीं की पाठ्यपुस्तक

संपादक मंडल

प्रो. टी. वी. कट्टीमनी
अध्यक्ष, हिंदी विभाग, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू विश्वविद्यालय,हैदराबाद

प्रो. शकुंतला रेड्डी
क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद

प्रो. शुभदा वांजपे
प्रोफेसर, उस्मानिया विश्वविद्यालय

शैक्षिक सलाहकार

डॉ. रमाकांत अग्निहोत्री
सेवानिवृत्त प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय

श्री सुवर्ण विनायक
शैक्षिक सलाहकार, एस. सी. ई. आर. टी., आं. प्र.

समन्वयक

डॉ. पी. शारदा
हिंदी विभाग, एस. सी. ई. आर. टी., आं. प्र.

पाठ्य पुस्तक विकास एवं प्रकाशन समिति

श्रीमती बी. शेषु कुमारी
निदेशक, एस. सी. ई. आर. टी., आंध्र प्रदेश

डॉ. एन. उपेंदर रेड्डी
प्रोफेसर, सी एंड टी, एससीईआरटी, आं.प्र.

श्री बी सुधाकर
निदेशक, सरकारी पुस्तक प्रकाशनालय, आंध्र प्रदेश

© SCERT not to be republished

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा प्रकाशित, हैदराबाद

विद्या से आगे बढ़ो।
विनय से रहो।

क़ानून का आदर करो।
अधिकार प्राप्त करो।

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

© Government of Andhra Pradesh, Hyderabad.

New Edition

First Published 2012

All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form or by any means without the prior permission in writing of the publisher, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser.

The copy right holder of this book is the Director of School Education, Hyderabad, Andhra Pradesh.

© SCERT not to be republished

This Book has been printed on 80 G.S.M. SS Maplitho Title Page 200 G.S.M. White Art Card

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निःशुल्क वितरण

Printed in India
at the Andhra Pradesh Govt. Text Book Press,
Mint Compound, Hyderabad,
Andhra Pradesh.

— o —

सहभागी गण

डॉ. पी. शारदा
हिंदी विभाग,
एस. सी. ई. आर. टी., आंध्र प्रदेश, हैदराबाद

श्री सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

डॉ. शेख़ अब्दुल ग़नी
एस.ए. हिंदी, जी.एच. एस. रामन्नापेट,नलगोंडा

डॉ. राजीव कुमार सिंह
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

श्री सय्यद मतीन अहमद
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

डॉ. सैयद एम. एम. वजाहत
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

श्रीमती एन. हेमलता
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

© SCERT not to be republished

विषय सलाहकार

श्री कुमार अनुपम
संसाधक,विद्या भवन संदर्भ केंद्र
उदयपुर, राजस्थान

श्री पुष्पराज राणावत
संसाधक,विद्या भवन संदर्भ केंद्र
उदयपुर, राजस्थान

श्री अनुशब्द
संसाधक,विद्या भवन संदर्भ केंद्र
उदयपुर, राजस्थान

चित्रांकन

श्री कुरेल्ला श्रीनिवास
नलगोंडा, आंध्र प्रदेश

श्री अलवाला किशोर
नलगोंडा, आंध्र प्रदेश

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

आमुख

हमें ज्ञात है कि बालक भाषा अधिगम साधारणतया सहज व व्यावहारिक रूप में करते हैं। इन बातों व एनसीएफ-2005, आरटीई-2009, एससीएफ-2010 एवं आधार पत्र-2011 के सुझावों को ध्यान में रखते हुए इस पाठ्य-पुस्तक का सृजन किया गया है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास है। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभव पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

यह उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है, जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

श्रीमती बी. शेषु कुमारी
निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद
आंध्र प्रदेश, हैदराबाद

© SCERT not to be republished

आभार

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद,आंध्र प्रदेश, हैदराबाद, ने छठवीं कक्षा प्रथम भाषा हिंदी के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद की छठवीं कक्षा हिंदी की वसंत–1 शीर्षकीय पुस्तक के पाठों को लेकर, एपीएससीएफ–2011 में बताये गये मानदंडों के आधार पर अभ्यास जोड़े गये। वसंत–1 के अभ्यासों के अतिरिक्त सुनिए–बोलिए, सृजनात्मक अभिव्यक्ति, शब्द–भंडार, प्रशंसा, भाषा परियोजनका कार्य जोड़े गये हैं। हर पाठ का आरंभ एक प्रस्तावना चित्र, प्रश्न, सूचनाओं के साथ हुआ है। इस तरह बनायी गयी पाठ्यपुस्तक का नाम बाल – वसंत – 1 रखा गया है। वसंत–1 के पाठों व अभ्यासों को स्वीकारने की अनुमति देने के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली के हम आभारी हैं। पाठ्यपुस्तक के विकास एवं निर्माण हेतु प्रशिक्षण देने के लिए प्रो. रमाकांत अग्निहोत्री, पाठों के चयन तथा सुझाव देने के लिए विद्या भवन सोसायटी के विषय विशेषज्ञों को विशेष आभार प्रकट किया जाता है।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परषिद, आंध्र प्रदेश, हैदराबाद प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से एन.सी.ई.आर.टी. की ओर से गठित पाठ्य पुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व आभार व्यक्त करती है। परिषद् भाषा सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर नामवर सिंह और इस पुस्तक के मुख्य सलाहकार प्रोफ़ेसर पुरुषोत्तम अग्रवाल की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया, इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। इस पुस्तक के निर्माण में जिन लेखकों और कवियों की रचनाओं को सम्मिलित किया गया है, उसके लिए उन साहित्यकारों और प्रकाशन संस्थाओं तथा अकादमिक सहयोग के लिए शारदा कुमारी और नीलकंठ के प्रति परिषद आभार व्यक्त करती है। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परषिद, आंध्र प्रदेश, हैदराबाद टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

© SCERT not to be republished

अध्यापकों के लिए सूचनाएँ

यह किताब राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) के आधार पर तैयार किए गए पाठ्यक्रम पर आधारित है। यह पारंपरिक भाषा शिक्षण की कई सीमाओं से आगे जाती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की नयी रूपरेखा भाषा को बच्चे के व्यक्तित्व का सबसे समृद्ध संसाधन मानते हुए उसे पाठ्यक्रम के हर विषय से जोड़कर देखती है। इस नाते पाठ्यसामग्री का चयन और अभ्यासों में बच्चे के भाषायी विकास की समग्रता को ध्यान में रखा गया है। हर पाठ के अभ्यास में सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना कौशलों से संबंधित अभ्यासों के साथ-साथ शब्द-भंडार, भाषा की बात, सृजनात्मक अभिव्यक्ति से संबंधित अभ्यास भी दिये गये हैं। इन सभी का सदुपयोग कर, छात्रों में भाषागत कौशलों व विविध दक्षताओं का समुचित विकास करने का प्रयास करें। बालगीत या वार्तालाप या कहानी आदि पाठों के लिए सुनने-बोलने संबंधी क्रियाएँ कक्षा में सामूहिक रूप से करवायें। सबको स्वतंत्र व सहज रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित करें। कई अभ्यास-प्रश्न भाषा शिक्षण की परिचित परिधि से बाहर जाकर प्रकृति, समाज, विज्ञान, इतिहास आदि में बच्चे की जिज्ञासा को नए आयाम देते हैं। उदाहरण के लिए शमशेर बहादुर सिंह की कविता 'चाँद से थोड़ी सी गप्पें' में दिया गया एक प्रश्न चंद्रमा की कलाओं के बारे में है और सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता 'झाँसी की रानी' में इतिहास और भूगोल के भी कुछ प्रश्न दिए गए हैं। ऐसे प्रश्नों के ज़रिए बच्चों को हिंदी की विपुल शब्द-संपदा के विविध हिस्सों का स्पर्श मिलेगा। वे आज के शहरी जीवन में अपेक्षाकृत कम सुनाई पड़ने वाले शब्दों और प्रयोगों को अपना सकेंगे।

नयी कविता बच्चों के लिए अनुपयुक्त मानी जाती रही है। शिक्षकों में भी उसे भावार्थ, सीख आदि के पारंपरिक शैक्षणिक पैमानों पर कुछ अटपटा मानने की प्रवृत्ति रही है। इससे साहित्य की समग्रता के प्रति बच्चों की रुचि को बढ़ाने में हम सफल नहीं हो सकते। नयी कविता के पाठ और प्रश्न-अभ्यासों के माध्यम से बच्चों के ज्ञान और ग्रहण कौशल का विकास किया जा सकता है। अंततः कोई भी भाषा-पुस्तक तभी सफल मानी जाएगी जब वह बच्चों को साहित्य की धरोहर और आज लिखे जा रहे साहित्य के प्रति उत्सुक बनाए।

हिंदी के प्रचलित विभिन्न रूप और उसकी बोलियाँ भी इसकी धरोहर का अंग हैं और उस लोक का निर्माण करती हैं जिसमें हिंदी फलती-फूलती रही है। विभिन्न पाठों में यत्र-तत्र प्रयोग में आए हिंदी के प्रचलित रूपों और बोलियों का ज्ञान संसाधन के रूप में शिक्षक इस्तेमाल करें और बच्चों को भी इसके प्रयोग के लिए प्रेरित करें तो हिंदी की इस विस्तृत लोक-निधि के प्रति आदर और उत्साह का संस्कार विकसित होगा। उदाहरण के लिए प्रारंभिक हिंदी की झलक देने वाली अवधी में लिखी गई तुलसीदास की कविता 'वन के मार्ग में' और आज की हिंदी की झलक देने वाली कृष्णा सोबती की रचना 'बचपन' तथा विष्णु

© NCERT not to be republished

प्रभाकर का एकांकी 'ऐसे-ऐसे' के भाषा प्रयोगों के नमूनों से बच्चों को हिंदी की समृद्ध परंपरा के प्रति संवेदनशील बनाया जा सकता है।

बहुभाषिकता की झलक पाठों में एक स्रोत के रूप में दिखाई देगी। भारतीय भाषाओं से लिए गए कुछ अनूदित पाठ जैसे 'पार नज़र के', 'टिकट अलबम' आदि विद्यार्थियों को भारतीय भाषाओं की रचनाओं से परिचित कराएँगे। पाठ्यपुस्तक में ही **व्याकरण** की समझ उत्पन्न करने के लिए इससे संबंधित अभ्यास दिए गए हैं, इसलिए अलग से व्याकरण की कोई पुस्तक नहीं दी जा रही है। आशा है ऐसे अभ्यासों के द्वारा विद्यार्थियों में भाषायी समझ विकसित होगी और बिना रटे ही उनमें भाषायी कौशलों का विकास होगा।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की नयी रूपरेखा में हाथों से की जाने वाली गतिविधियों, उसकी कला संबंधी दक्षता व रुचि को प्रोत्साहित करने तथा कक्षा के बाहर का जीवन-जगत कक्षा में लाने एवं उसे चर्चा का विषय बनाने की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

पाठ्यपुस्तक के प्रति विद्यार्थी के अपनेपन को और सघन बनाने के लिए पाठों के अतिरिक्त कुछ रोचक सामग्रियाँ दी गई हैं। इसी तरह पाठों के साथ विद्यार्थी की जानकारी और जिज्ञासा को बढ़ाने वाली सामग्रियाँ भी रखी गई हैं। इन पाठ्यसामग्रियों का अंतर्संबंध अन्य शैक्षिक विषयों से बनता है और इनसे विद्यार्थी के संबंधित ज्ञान में वृद्धि होती है। 'केवल पढ़ने के लिए' के अंतर्गत दी गई पाठ्यसामग्रियाँ इस दृष्टि से अधिक उपयोगी हैं कि उनका पाठों के साथ अंतर्संबंध है। शिक्षकों से अपेक्षा है कि 'केवल पढ़ने के लिए' दी गईं पाठ्यसामग्रियों के आधार पर परीक्षा के प्रश्न-पत्रों में किसी भी प्रकार के प्रश्न न पूछें। हाँ, शिक्षण के क्रम में इन पाठ्यसामग्रियों की चर्चा की जा सकती है तथा परिवेश के अनुसार अन्य पाठ्यसामग्रियाँ भी दी जा सकती हैं।

इस पाठ्यपुस्तक में बच्चों की **स्वाभाविक अभिव्यक्ति**, **कल्पनाशीलता**, **कौशल** और **सोच** को आसपास के परिवेश में ही विकसित करने हेतु उसके खुद कुछ करने, लिखने-पढ़ने एवं देखने-सुनने के साथ अन्य गतिविधियों के संवर्धन हेतु 'पाठ से आगे' तथा 'अनुमान और कल्पना' के तहत कुछ नए तरह के प्रश्न-अभ्यासों का निर्माण किया गया है, जिसे शिक्षक और बच्चों के सम्मिलित प्रयासों से ही सही रूप में पूरा किया जाना संभव है। 'पेपरमेशी' जैसे पाठों को केवल पढ़ने के लिए शामिल कर बच्चों को स्थानीय ज्ञान से जोड़ने के प्रति संवेदनशील बनाने का प्रयास किया गया है। इसलिए शिक्षकों से आशा है कि वे इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए विद्यार्थियों का उचित मार्ग-दर्शन करें। हस्त-शिल्प कला और अन्य स्थानीय कलाओं के लिए सुविधानुसार शिक्षक कुछ अभ्यास-कार्य व आवश्यक गतिविधियाँ स्वयं भी करा सकते हैं।

© SCERT not to be republished

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

क्या कहाँ है?

इकाई	क्र. सं.	पाठ का नाम	विधा	पृष्ठ सं.
I.	1.	साथी हाथ बढ़ाना	गीत	1
	2.	बचपन	संस्मरण	6
	3.	जो देखकर भी नहीं देखते	निबंध	13
	4.	अक्षरों का महत्व	निबंध	19
	5.	मैं सबसे छोटी होऊँ	पठन हेतु	25
II.	6.	चाँद से थोड़ी-सी गप्पें	कविता	26
	7.	संसार पुस्तक है	पत्र	31
	8.	पार नज़र के	कहानी	37
	9.	झाँसी की रानी	पठन हेतु	44
III.	10.	वन के मार्ग में	कविता	52
	11.	बाल रामायण	उपवाचक (पठन हेतु)	56
	12.	नादान दोस्त	कहानी	62
	13.	लोकगीत	निबंध	70
	14.	टिकट अलबम	कहानी	76
IV.	15.	वह चिड़िया जो	कविता	85
	16.	ऐसे-ऐसे	एकांकी	89
	17.	नौकर	कहानी	98
	18.	साँस-साँस में बाँस	उपवाचक (पठन हेतु)	107

सूचना : उपवाचक एवं पठन हेतु के पाठ केवल पढ़ने लिए ही दिये गये हैं। इनका शिक्षण अन्य पाठों की तरह न होकर बल्कि बच्चों से पढ़वाना चाहिए। बातचीत करवानी चाहिए। उनके अपने शब्दों में लिखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

© SCERT not to be republished

राष्ट्र-गान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे!
भारत भाग्य विधाता।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड़, उत्कल बंग।
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा
उच्छल जलधि-तरंग।
तव शुभ नामे जागे।
तव शुभ आशीष मांगे,
गाहे तव जय गाथा!
जन-गण-मंगलदायक जय हे!
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे! जय हे! जय हे!
जय, जय, जय, जय हे!

- रवींद्रनाथ टैगोर

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है और समस्त भारतीय मेरे भाई-बहन हैं। मैं अपने देश से प्रेम करता हूँ और इससे प्राप्त विशाल एवं विविध ज्ञान-भंडार पर मुझे गर्व है। मैं सर्वदा इस देश एवं इसके ज्ञान-भंडार के अनुरूप बनने का प्रयास करूँगा। मैं अपने माता-पिता और अध्यापकों तथा समस्त गुरुजनों का आदर करूँगा और प्रत्येक व्यक्ति के प्रति नम्रतापूर्वक व्यवहार करूँगा। मैं जीव-जंतुओं से भी प्रेमपूर्वक व्यवहार करूँगा। मैं अपने देश और उसकी जनता के प्रति अपनी भक्ति की शपथ लेता हूँ। उनके मंगल एवं समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।

© SCERT not to be republished

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

जहाँ-जहाँ पर यह चिह्न आये, वहाँ-वहाँ यह करें

सुनिए-बोलिए

पढ़िए

परियोजना कार्य

लिखिए

शब्द-भंडार

क्या मैं ये कर सकता हूँ

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

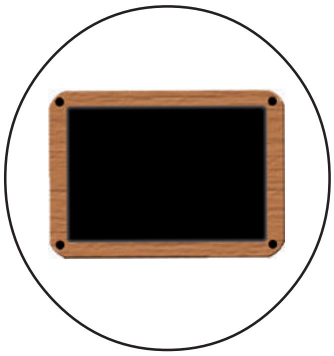

भाषा की बात

© SCERT not to be republished